International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 147-148

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 147-148
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 29-09-2018
Accepted: 30-10-2018

डॉ. लता देवी
सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. लता देवी
सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

विद्योत्तमा नाटक में भौगोलिक स्थिति

डॉ. लता देवी

प्रस्तावना

पण्डित विष्णुदत्त त्रिपाठी द्वारा विरचित 'विद्योत्तमा नाटक' में कवि ने पांच अंकों में विद्योत्तमा और कालिदास की प्रणयगाथा उपनिबद्ध की है। कथावस्तु का केन्द्र विद्योत्तमा का विवाह है। विद्योत्तमा के विवाह में विभिन्न बाधाएँ उपस्थित होती है, जिनके निराकरण में उसकी सखियों की भूमिका सराहनीय है।

सर्वप्रथम भौगोलिक स्थिति के अन्तर्गत देश, नगर, पर्वत, नदी, वन, सरोवर आदि का उल्लेख मिलता है। देशों में भारत तथा नगरों में उज्जयिनी, काशी, कलकत्ता कश्मीर, धारा नगरी का उल्लेख हुआ है। पर्वत में हिमालय पर्वत तथा नदी में क्षिप्रा नदी का वर्णन है। वन में चन्दनवन, सरोवर तथा ऋतुओं में वसन्त ऋतु का वर्णन है तथा अन्त में निष्कर्ष दर्शाया गया है।

पण्डित विष्णुदत्त त्रिपाठी ने तात्कालिक परिवेश के वर्णन के माध्यम से 'विद्योत्तमा नाटकम्' में उल्लिखित भौगोलिक स्थिति का विवरण दिया है। इसके अन्तर्गत उन्होंने देश, नगर, पर्वत, नदियाँ वन, सरोवर, ऋतुएँ, वायु पुष्पों, पशु–पक्षियों का बहुत ही रोचक ढंग से विवेचन किया है। कवि ने 'विद्योत्तमा नाटकम्' में अधोलिखित स्थलों का वर्णन किया है –

देश

'विद्योत्तमा नाटकम्' में पंचम अंक में भरतवाक्य के उल्लेख से पता चलता है कि यह नाटक देश भारत से लिया गया है। इसका संकेत इस श्लोक से मिलता कि समस्त लोगों की अभिलाषाएँ पूर्ण हो, पृथ्वी धान्य से भरी हो। वह राजेन्द्रप्रसाद नामक सुधी राष्ट्रपति दयापूर्वक देश की रक्षा करें। इस पृथ्वी पर जो राज्यपालगण हैं, वे निरन्तर प्रमुख राज्यों का पालन करें।[1] प्रस्तुत श्लोक में भारत देश का वर्णन किया गया है।

नगर

'विद्योत्तमा नाटक' में निम्नलिखित नगरों का उल्लेख मिलता है –

1. उज्जयिनी
2. काशी
3. कलकत्ता
4. कश्मीर
5. धारा

प्रथम अंक में उज्जयिनी नगर का वर्णन मिलता है कि शारदानन्द उज्जयिनी का ही राजा था जो विद्योत्तमा का पिता था। कलकत्ता तथा बनारस आदि उस समय के प्रमुख नगर थे जिनकी राजधानी उज्जैन थी। विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ करने के लिए विद्वान् काशी, कश्मीर तथा कलकत्ता से उज्जैन आने का वर्णन मिलता है।

पर्वत

पंचम अंक के एक श्लोक में कालिदास कहते हैं कि – उत्तर दिशा में देवतास्वरूप, हिमालय नामक पर्वतों का राजा है, जो पूर्व और पश्चिम समुद्र को व्याप्त कर पृथ्वी के मानदण्ड की तरह स्थित है।[2] प्रस्तुत श्लोक में हिमालय पर्वत का उल्लेख है।

नदियां

पंचम अंक में प्रस्तुत पंक्तियों से क्षिप्रा नदी का उल्लेख मिलता है जब विद्योत्तमा की दासी उसकी सखी कमला से बात करती है कि– आर्य कमले! आज क्षिप्रा नदी के तट पर एक किशोर वयवाले, सुन्दर कुमार को सन्ध्योपासना करते हुए देखकर मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि कहीं वह राजकुमारी का पति तो नहीं है?[3] इस नाटक में क्षिप्रा नदी का उल्लेख मिलता है।

वन

'विद्योत्तमा नाटकम्' में कवि ने वनों का उल्लेख किया है प्रथम अंक में शारदानन्द अपनी पत्नी ज्ञानवती से समीप में तपोवन होने की बात कहता है।[4] नगर से दूर वन में नदी के किनारे शान्त स्थान पर तपोवन होते थे।

सरोवर

'विद्योत्तमा नाटक' के प्रथम अंक[5] में सरोवर का परिचय प्राप्त होता है। सरोवर में उठती हुई लहरों के सम्पर्क के कारण वन में बहने वाली हवा भी शीतल हो जाती थी।

ऋतुएँ – 'विद्योत्तमा नाटक' में दो ऋतुओं का वर्णन किया है –

1. वसन्त ऋतु
2. शिशिर ऋतु

वसन्त ऋतु

यह कोकिल मधुर शब्द कर रहा है। रसाल – (आम्र) पुष्पों पर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। वसन्त ऋतु में वायु विग्रह धारण कर मदोन्मत्त की भान्ति मन्दगति से प्रवाहित हो रहा है।[6] प्रस्तुत श्लोक में वसन्त ऋतु का उल्लेख किया गया है।

शिशिर ऋतु

सरोवर – तरङ्गों के सस्पर्श से शीतल वायु से समन्वित उद्यान – लताओं में दुर्ग की भाँति छिपे हुए शिशिर ऋतु पर वसन्त ने अपने मित्र सूर्य की शक्ति को पाकर धीरे–धीरे विजय प्राप्त की।[6] प्रस्तुत श्लोक में शिशिर और वसन्त दोनों ऋतुओं का वर्णन किया गया है।

निष्कर्ष

पण्डित विष्णुदत्त त्रिपाठी ने भौगोलिक स्थिति के अन्तर्गत देश, नगर, पर्वत, नदियाँ, वन, सरोवर, ऋतुएँ, वायु, पुष्पों, पशु–पक्षियों का बहुत ही रोचक तथा प्रभावपूर्ण ढंग से विवेचन किया है जिससे उनके गहन भौगोलिक ज्ञान का परिचय प्राप्त होता है।

सन्दर्भ–सूची

1. विद्योत्तमा, 5.17
2. वही, 5.13
3. वही, 5, पृष्ठ, 61
4. वही, 1, पृष्ठ, 5
5. वही, 1.3
6. वही, 1.2